सफ़र की दुआऐं

eCard

بسم الله الرحمٰن الرحيم

सफ़र से पहले

मुसाफ़िर घर वालों को दुआ दे

❁ اَسْتَوْدِعُکَ اللّٰهَ الَّذِیْ لَا تَضِیْعُ وَدَائِعُهٗ

मैं तुम्हें अल्लाह के सुपुर्द करता हूँ जिसके पास रखी गईं अमानतें जाया नहीं होतीं. (سنن ابن ماجه: 2825)

घर वाले मुसाफ़िर को दुआ दें

❁ اَسْتَوْدِعُ اللّٰهَ دِیْنَکَ وَ اَمَانَتَکَ وَخَوَاتِیْمَ عَمَلِکَ

मैं तेरा दीन,तेरी अमानत और तेरे अमल का इख़्तिताम अल्लाह के सुपुर्द करता हूँ. (سنن ترمذی: 3443)

❁ زَوَّدَکَ اللّٰهُ التَّقْوٰی وَغَفَرَ ذَنْبَکَ وَیَسَّرَ لَکَ الْخَیْرَ حَیْثُ مَا کُنْتَ

अल्लाह तुझे तक़वा का तोशा अता करे,तेरे गुनाह माफ़ करे,और जहां कहीं भी तू हो तेरे लिए ख़ैर को आसान करे. (سنن ترمذی: 3444)

पांव सवारी पर रखते हुए

❁ بِسْمِ اللّٰهِ

अल्लाह के नाम के साथ. (तीन बार)

सवारी पर बैठने के बाद

❁ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ

तमाम तारीफें अल्लाह ताला के लिए हैं. (एक बार)

© AHU INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

۞ سُبۡحٰنَ الَّذِیۡ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا کُنَّا لَهٗ مُقۡرِنِیۡنَ ۝
وَاِنَّاۤ اِلٰی رَبِّنَا لَمُنۡقَلِبُوۡنَ ۝ [الزّخرف:14-13]

पाक है वो ज़ात जिसने इस (सवारी) को हमारे लिए मुसख़्ख़र किया वरना हम इसे क़ाबू में लाने वाले ना थे और बेशक हम अपने रब ही की तरफ़ लौटने वाले हैं.

۞ اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ
तमाम तारीफ़ें अल्लाह ताला के लिए हैं. (तीन बार)

۞ اَللّٰهُ اَکۡبَرُ
अल्लाह सबसे बड़ा है. (तीन बार)

۞ سُبۡحَانَکَ اِنِّیۡ قَدۡظَلَمۡتُ نَفۡسِیۡ فَاغۡفِرۡلِیۡ فَاِنَّهٗ
لَا یَغۡفِرُ الذُّنُوۡبَ اِلَّا اَنۡتَ

पाक है तू,बेशक मैंने (तेरी नाफ़रमानी करके) अपने नफ़्स पर ज़ुल्म किया है,पस तू मुझे माफ़ फ़रमादे क्योंकि तेरे इलावा गुनाहों को कोई नहीं बख़्श सकता. (سنن ترمذی: 3446)

۞ اَللّٰهُ اَکۡبَرُ،اَللّٰهُ اَکۡبَرُ،سُبۡحٰنَ الَّذِیۡ سَخَّرَ
لَنَا هٰذَا وَمَا کُنَّا لَهٗ مُقۡرِنِیۡنَ وَاِنَّا اِلٰی رَبِّنَا لَمُنۡقَلِبُوۡنَ،
اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسۡاَلُکَ فِیۡ سَفَرِنَا هٰذَا الۡبِرَّ وَالتَّقۡوٰی وَمِنَ
الۡعَمَلِ مَا تَرۡضٰی اَللّٰهُمَّ هَوِّنۡ عَلَیۡنَا سَفَرَنَا هٰذَا وَاطۡوِعَنَّا
بُعۡدَهٗ،اَللّٰهُمَّ اَنۡتَ الصَّاحِبُ فِی السَّفَرِ وَالۡخَلِیۡفَةُ فِیۡ

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

الْاَهْلِ، اَللّٰهُمَّ اِنِّیۡ اَعُوۡذُبِکَ مِنۡ وَّعْثَاءِ السَّفَرِ وَکَآبَۃَ
الْمَنْظَرِ وَسُوْءِ الْمُنْقَلَبِ فِی الْمَالِ وَالْاَهْلِ

अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, पाक है वो ज़ात जिसने इस (सवारी) को हमारे लिए मुसख़्ख़र कर दिया हालांकि हम इसको क़ाबू में लाने वाले ना थे और बेशक हम अपने रब की तरफ़ लौटने वाले हैं. ऐ अल्लाह ! हम इस सफ़र में आपसे नेकी,तक़्वा और ऐसे अमल का सवाल करते हैं जो आपको पसंद हो. ऐ अल्लाह ! हमपर इस सफ़र को आसान करदे और इसकी दूरी को लपेट दे. ऐ अल्लाह ! आप सफ़र में (हमारे) साथी हैं और हमारे अहलो अयाल में हमारे ख़लीफ़ा हैं. ऐ अल्लाह ! मैं सफ़र की तकलीफ़ से, बुरे मंज़र से और अपने माल और अहलो अयाल में बुरी हालत के साथ वापस आने से आपकी पनाह तलब करता हूँ. (صحیح مسلم:3275)

कशती पर बैठने के बाद

✵ بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرٖهَا وَمُرْسٰهَا اِنَّ رَبِّیۡ لَغَفُوۡرٌ رَّحِیۡمٌ ۝

अल्लाह के नाम के साथ इसका चलना और ठहरना है. बेशक मेरा रब बहुत बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है. (ھود: 41)

सफ़र के दौरान सुब्ह के वक़्त मांगी जाने वाली दुआ

✵ سَمِعَ سَامِعٌ بِحَمْدِ اللّٰهِ وَحُسْنِ بَلَائِهٖ عَلَیْنَا،
رَبَّنَا صَاحِبْنَا وَاَفْضِلْ عَلَیْنَا عَائِذًا بِاللّٰهِ مِنَ النَّارِ

सुन लिया सुनने वाले ने अल्लाह की हम्द को और हमपर उसकी नेमतों की ख़ूबी के इक़रार को- ऐ अल्लाह ! हमारे साथ रह और हम पर फ़ज़्ल कर,मैं आग से अल्लाह की पनाह लेता हूँ. (صحیح مسلم: 6900)

© AL-HIDAYAH INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

सफ़र के दौरान

✵ اَللّٰهُ اَكْبَرُ — ऊँचाई पर चढ़ते हुए: अल्लाह सबसे बड़ा है

(صحیح بخاری:2994)

✵ سُبْحَانَ اللّٰهِ — ऊँचाई से नीचे उतरते हुए: अल्लाह पाक है

सवारी के ठोकर खाने पर

✵ بِسْمِ اللّٰهِ (سنن ابی داؤد:4982) — अल्लाह के नाम से

शहर में दाख़िल होते वक़्त

✵ رَبِّ اَدْخِلْنِیْ مُدْخَلَ صِدْقٍ وَّاَخْرِجْنِیْ مُخْرَجَ
صِدْقٍ وَّاجْعَلْ لِّیْ مِنْ لَّدُنْکَ سُلْطٰنًا نَّصِیْرًا ۝

ऐ मेरे रब ! मुझे सच्चाई के मक़ाम पर दाख़िल कर और मुझे सच्चाई के मक़ाम से ही निकाल और मेरे लिए अपने पास से मददगार क़ुव्वत मुहय्या फ़रमा. (بنی اسرائیل: 80)

✵ اَللّٰهُمَّ رَبَّ السَّمٰوَاتِ السَّبْعِ وَمَا اَظَلَّتْ وَرَبَّ
الْاَرْضِیْنَ السَّبْعِ وَمَا اَقَلَّتْ وَرَبَّ الرِّیَاحِ وَمَا اَذَرَّتْ
وَرَبَّ الشَّیَاطِیْنِ وَمَا اَضَلَّتْ اِنِّیْ اَسْاَلُکَ خَیْرَهَا وَ
خَیْرَمَا فِیْهَا وَاَعُوْذُبِکَ مِنْ شَرِّهَا وَشَرِّ مَا فِیْهَا

ऐ अल्लाह ! ऐ सातों आसमानों के रब और जिन चीज़ों पर उन्होंने साया किया है और सातों ज़मीनों के रब और जिन चीज़ों को उन्होंने

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

उठाया है और हवाओं के रब और जो कुछ उन्होंने उड़ाया है और शैतानों के रब और जिन्हें उन्होंने गुमराह किया है बेशक मैं तुझसे इस बस्ती की ख़ैर और जो इसमें है उसकी ख़ैर का सवाल करता हूँ और उसके शर से और उन चीज़ों के शर से जो उसमें हैं तेरी पनाह मांगता हूँ. (السلسلة الصحيحة: 2759)

किसी जगह उतरते वक़्त

❋ رَبِّ اَنْزِلْنِیْ مُنْزَلاً مُّبٰرَکًا وَّاَنْتَ خَیْرُالْمُنْزِلِیْنَo

ऐ मेरे रब ! मुझे बर्कत वाली जगह उतार और आप सबसे अच्छा ठिकाना देने वाले हैं. (المؤمنون: 29)

किसी जगह ठहरने के वक़्त

❋ اَعُوْذُ بِکَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّمَا خَلَقَ

मैं अल्लाह के कामिल कलिमात की पनाह लेता हूँ हर उस चीज़ के शर से जो उसने पैदा की. (صحيح مسلم: 6878)

दुश्मन के डर या शर से बचने के लिए

❋ اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَجْعَلُکَ فِیْ نُحُوْرِهِمْ وَنَعُوْذُبِکَ مِنْ شُرُوْرِهِمْ

ऐ अल्लाह ! बेशक हम तुझे दुश्मनों के नरख़रों पर(उनके मुक़ाबले में) रखते हैं और उनके शर से तेरी पनाह तलब करते हैं. (سنن ابی داؤد:1537)

❋ اَللّٰهُمَّ اکْفِنِیْهِمْ بِمَا شِئْتَ (صحيح مسلم:7511)

ऐ अल्लाह ! मुझे इनसे काफ़ी होजा जिस चीज़ के साथ तू चाहे.

मुसीबत ज़दा को देखकर

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

✵اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ عَافَانِیْ مِمَّا ابْتَلَاکَ بِهٖ وَ فَضَّلَنِیْ
عَلٰی کَثِیْرٍ مِّمَّنْ خَلَقَ تَفْضِیْلًا (سنن ابن ماجه:3892)

हर क़िस्म की तारीफ़ उस अल्लाह के लिए है जिसने मुझे इस मुसीबत से आफ़ियत में रखा जिसमें तुझे मुब्तिला किया है और अपने पैदा किए हुए बहुत से बन्दों पर उसने मुझे फ़ज़ीलत अता फ़रमाई.

बाज़ार जाते हुए

✵لَااِلٰـهَ اِلَّا اللّٰـهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِیْکَ لَهٗ لَهُ الْمُلْکُ وَلَهُ
الْـحَـمْـدُ يُـحْيِـی وَيُـمِيْـتُ وَهُوَ حَیٌّ لَّا يَمُوْتُ بِيَدِهِ
الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ (سنن ترمذی : 3428)

अल्लाह के सिवा कोई माअबूद नहीं वो अकेला है उसका कोई शरीक नहीं, उसी के लिए बादशाहत है और उसी की तारीफ़ है,वो ज़िन्दा करता है और मौत देता है और वो ज़िन्दा है कभी नहीं मरेगा,भलाई उसी के हाथ में है और वो हर चीज़ पर पूरी तरह क़ादिर है.

सफ़र से वापस आते हुए

✵ اَللّٰهُ اَكْبَرُ،اَللّٰهُ اَكْبَرُ،اَللّٰهُ اَكْبَرُ،سُبْحَانَ الَّذِیْ سَخَّرَ
لَـنَـا هٰـذَا وَمَـا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِيْنَ وَاِنَّا اِلٰی رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ،
اَلـلّٰهُـمَّ اِنَّانَسْاَلُكَ فِیْ سَفَرِنَا هٰذَاالْبِرَّوَ التَّقْوٰی وَمِنَ
الْعَمَلِ مَا تَرْضٰی اَللّٰهُمَّ هَوِّنْ عَلَيْنَا سَفَرَنَا هٰذَا وَ اطْوِ عَنَّا

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

بُعْدَهُ،اَللّٰهُمَّ اَنْتَ الصَّاحِبُ فِی السَّفَرِ وَالْخَلِيْفَةُ فِی الْاَهْلِ،اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنْ وَّعْثَاءِ السَّفَرِ وَکَآبَةِ الْمَنْظَرِ وَسُوْءِ الْمُنْقَلَبِ فِی الْمَالِ وَالْاَهْلِ،آئِبُوْنَ تَائِبُوْنَ عَابِدُوْنَ لِرَبِّنَا حَامِدُوْنَ [صحيح مسلم:3275]

अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, पाक है वो ज़ात जिसने इस (सवारी) को हमारे लिए मुसख़्ख़र कर दिया हालांकि हम इसको क़ाबू में लाने वाले ना थे और बेशक हम अपने रब की तरफ़ लौटने वाले हैं. ऐ अल्लाह ! हम इस सफ़र में आपसे नेकी,तक़्वा और ऐसे अमल का सवाल करते हैं जो आपको पसंद हो. ऐ अल्लाह ! हमपर इस सफ़र को आसान करदे और इसकी दूरी को लपेट दे. ऐ अल्लाह ! आप सफ़र में (हमारे) साथी हैं और हमारे अहलो अयाल में हमारे ख़लीफ़ा हैं. ऐ अल्लाह ! मैं सफ़र की तकलीफ़ से, बुरे मंज़र से और अपने माल और अहलो अयाल में बुरी हालत के साथ वापस आने से आपकी पनाह तलब करता हूँ. हम लौटने वाले हैं,तौबा करने वाले हैं,इबादत करने वाले हैं,अपने रब की तारीफ़ करने वाले हैं.

घर में दाख़िल होते वक़्त

✵ اَوْبًا اَوْبًا لِرَبِّنَا تَوْبًا لَّا يُغَادِرُ عَلَيْنَا حَوْبًا (المعجم الکبير الطبرانی:11735)

पलटने वाले हैं,पलटने वाले हैं,हम अपने रब ही के हुज़ूर तौबा करते हैं, ऐसी तौबा जो हम पर गुनाहों का कोई असर बाक़ी ना रहने दे.

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

AlHuda Welfare Trust India
Post Box Number 444, Basavanagudi Bangalore 560004 ,India
+918040924255. | +91-9535612224
alhuda.india@gmail.com | www.farhathashmi.com